गुरू वन्दना

गुरू ही माता, गुरू ही पिता, गुरू पूर्ण ब्रहमपरमेश्वर,
हे परम पिता परमेश्वर, तुम्हे बार बार आदेश।
सतगुरू मेरो सांवरो, मै पांछि अन्जान,
मेहर करे जे सावरां ता होवे कल्याण।
महिमा गुरू दे नाम दी कर सका ना ब्यान
दास की मूहों बोलना, हारन वेद पुराण।
सतगुरू सागर ज्ञान दे, जित्थो मिलदा नूर,
जागती जित्थो जोत है, जित्थो बनदा नूर।
वारी सतगुरू सांवरे मै सदके मेरे हजूर,
देवो जोती दास नू, ते मस्ती नाम सरूर।
सतगुरू नाम भण्डार है सर्व गुण दी खान,
बिरला ही कोई जानता, ऐहदी कदर पछान।
बेला हाथ नही आवना, न ऐह मौज महान,
दास गुरां दी शरण लै, जे चाहे कल्याण।

गणेश वन्दना

मैं तेरा लाल हां, काटो जी मेरे बन्धन
हे गोरी नंदन, हे गिरीजा नंदन
भोले नाथ शिवजी दे पुत्र प्यारे,
मां गौरीजा दे, अखियां दे तारे,
ऋषि मुनि नर सुर, करदे ने तेरा चिन्तन
हे गोरी नंदन.....
फुल्लां दे हार ले दाता दर तेरें ते आइये,
लड्डुया दा भोग नाले, मेवा चढाइये,
भोले भाले मस्तक ते सोभ रिहा चन्दन,
हे गोरी नंदन.....
गणपति जी सोहे तेरे मूसे दी सवारी,
ब्रहमा विष्णु इन्द्र तेरे पुजारी,
दया दा सरोवर है, तू सच्चा दुख भंजन
हे गोरी नंदन .....
दाता मेरे कारज सफल बनाओ
अल्हड नादान हां मैं, रास्ता दिखाओ
मै वी सेवक हाँ तेरा, मंगदा हां अन्न-धन,
हे गोरी नंदन.....
मै तेरा लाल.....